आजीविका - आगे की राह

शहरों में आजीविका के सभी साधन समाप्त होने पर, देशव्यापी लॉकडाउन की शुरुआत में लाखों लोग घर वापस लौट गए, जिससे ग्रामीण क्षेत्र से शहरों की ओर पलायन का परिचित स्वरूप बाधित हो गया। जिन परशानियों और जिस अपमान का उन्हें सामना करना पड़ा वह हम सभी की सामूहिक स्मृति में बना रहेगा। लोगों की गरिमा पर केंद्रित, गूंज में हमने इस तथ्य का उपयोग स्थानीय आजीविका के लिए अपनी पहल 'वापसी' के साथ इन लोगों की गरिमा को बढाने करने के हमारे संकल्प को मजबूत और तेज़ करने के लिए किया है।

पहली बार 2008 में कोसी बाढ़ के दौरान बाढ़ के बाद व्यापक रूप से लागू किया गया, जम्मू-कश्मीर में 2014 की बाढ़ के बाद और हाल ही में केरल में 2018 बाढ़ के बाद, 'वापसी' ग्रामीण भारत में बड़े पैमाने पर जीविकोपालन का एक आजमाया हुआ और परखा हुआ तरीका है। यह स्थानीय लोगों को उनकी जानकारी और उपलब्ध संसाधनों के साथ स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होने में सक्षम बनाता है।

क्षेत्र की जरूरतों के साथ उनके कौशल, ज्ञान और आकांक्षाओं का मिलान करते हुए, 'वापसी' लोगों को अपना जीवन बदलने से पहले उसे बेहतर बनाने का अवसर देता है। लेन-देन और व्यविश्लेषक नेतृत्व के बजाय यह लोगों को उनके समुदाय के लिए महत्वपूर्ण योगदानकारी भी बनाता है।

कोविड के दौरान हम पहले से ही सम्पूर्ण भारत में 'वापसी' पर कार्य शुरू कर चुके हैं। एक कदम और आगे बढ़ते हुए, हमारा डिग्री फार वर्क या DFW (श्रम सम्मान) दृष्टिकोण आजीविका की पहल में हमारे लिए रीढ़ की हड्डी का काम करता है, क्योंकि पहुँच बढ़ने से अवसर भी बढ़ते हैं।

वर्तमान में, परियोजनाओं का निष्पादन स्थानीयकृत कृषि, पानी के मुद्दों, शिल्प आदि पर ध्यान देने के साथ शुरू हुआ है, और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए परस्पर सहयोग स्थापित करने की सम्भावनायें देखी जा रही हैं। यह काम बड़े पैमाने पर होने जा रहा है और इसके लिए कई स्तरों पर संसाधनों और विशेषज्ञता के आवश्यकता होंगी। यदि यह आपको किस भी प्रकार का जोश देता है: केवल प्रश्न पूछने तक का, या हमारे साथ जुड़ने का, या समय व्यक्त करने का, तो कृपया हमें mail@goonj.org पर मैल करें।
अंशु गुप्ता
संस्थापक, गूँज

कार्यक्षेत्र की मुख्य गतिविधियां:

• 25 राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में काम शुरू हो गया है।
• 22 लाख किलो से अधिक राशन तथा अन्य जरूरी सामग्री पहुंचाई जा चुकी है।
• 1,20,000 किलो से अधिक सदियाँ तथा फल स्थानीय किसानों से खरीदा गया।
• स्वास्थ्य रक्षा संबंधी पहल: 5,00,000 फेस मास्क और कपड़े से बने सेनेटरी पैड बनाए गए।
• 1000 से अधिक डिजिटल फॉर वर्क (DFW) कार्य की शुरुआत की गयी।

वापसी - गूँज द्वारा आजीविका पहल...

जब अपने आस पास देखने पर एक आपदा के विनाश के सिवा कुछ भी नजर नहीं आता, तब 'सामाजिक' जीवन में वापसी वास्तविकता से कोसों दूर लगती है। 'वापसी' पहल के माध्यम से, गूँज इस आशा का प्रयास करता है की वापस लौटना संभव है।

'वापसी' 5 प्रेरक सिद्धांतों पर आधारित है:

1. लोगों की जानकारी, संसाधनों, क्षमताओं और आकांक्षाओं का सम्मान।
2. ग्राम/समुदाय की जरूरतों पर ध्यान देना। बाहरी निर्भरता कम करने के लिए समस्याओं का स्थानीय समाधान और संसाधन लागू करना।
3. ग्रामीण भारत को निर्माण, उपभोक्ता और खुद के लिए एक बाजार के रूप में देखना न कि शहरों के लिए केवल एक आपूर्तिकर्ता के रूप में।
4. इस बात का सम्मान करना की यदि हम कुछ समय के लिये लोगों का साथ दे तो वह आत्मनिर्भर बन सकते है।
5. गरिमा पर ध्यान देना, दान पर नहीं।
इसलिए, जब DFW (श्रम सम्मान) पहल के तहत, समुदाय को अपने गांव का तालाब साफ करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो यह न केवल उन्हें ताजे पानी का एक स्रोत सुनिश्चित करता है, बल्कि मछली पकड़ने और तालाब के इर्द-गिर्द उपजाऊ भूमि से वनस्पति उद्यान बनाने के लिए आजीविका उत्पन्न करने का एक क्षेत्र भी प्रदान करता है। साथ ही, स्थानीय सूज-भूज को शामिल कर, 'वापसी' समुदायों की आकांक्षाओं के प्रति सचेत रहने का प्रयास है - कृषि, पानी, कारीगरों और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को पुनर्जीवित करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्हें अपने जीवन को दिशा देने का समान अवसर देता है।

वापसी: बिहार में व्यापक कार्य पर एक प्रेरक केस स्टडी (कोसी बाढ़ के बाद)

हमारे हस्तक्षेप से पहले भी बिहार में आय और आजीविका एक बड़ी समस्या थी, इसी ने हमें एक नए विचार के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया.. वापसी। गौज ने बाढ प्रभावित समुदायों की जरूरतों को समझने के लिए बड़े पैमाने पर एक सर्वे किया। एक जिंदगी में बाढ़ की मदद से हमने 35 पारंपरिक व्यवसायों का चयन किया जिसके लिए हमने कम निवेश वाले व्यावसायिक कितें तैयार किए - मजदूरों के लिए, नाइटों के लिए, दारों से लेकर महिलाओं या विक्रेता-खरीदारों से व्यापार करने के लिए या सिलेचर मशीनों के साथ. व्यावसायिक कितें नए सिरे से शुरुआत करने के लिए आवश्यक बुनियादी उपकरण, कपड़े और सामग्री शामिल थी।

प्राप्तकर्ताओं के लिए अद्वितीय पुनर्भुजगतान विकल्प के रूप में उनके समुदाय के लिए श्रम दान (स्वैच्छिक श्रम) शामिल था। इस प्रकार, गौज ने वस्तु विनिमय प्रणाली के सरल पुनर्दौड़के के साथ, लोगों को अपनी आजीविका वापस मिली और उन्होंने अपने समुदाय को भी पुनः भूगतान किया। वापसी, जो अखिल भारतीय स्तर पर किया जा रहा है, लेकिन पूरी तरह से स्थानीयकृत है, एक नवीन समाधान निकलाया जो बेहतरीन प्रभाव उत्पन्न कर रहा है।

बिहार में बाढ़ के दौरान, 20,000 लोगों ने खेती, कृषि क्षेत्र, कृषि श्रमिक से लेकर नाइटों, मोचियों, दर्जों की टुकड़ों और टारों को शुरू करने, चाय की टुकड़ी, आमलेट की टुकड़ी से लेकर लेहों और किराने की टुकड़ी के लिए विशिष्ट और अनुकूलित वापसी कितें के माध्यम से सहयोग किया।

साझदारों के मुख से:

मुन्नी देवी ने वापसी पहल के तहत एक चाय की टुकड़ी खोली। अब वह हर दिन लगभग 150 रुपये कमाती है और अपने बच्चों को स्कूल की भेज पाती है। वह मुक्तरात हुए कहती हैं, "अब मुझे लग रहा है कि मैं गाँव में आम नहीं हूँ, मेरी एक पहचान बन गयी है।"
खुशीद को वापसी के तहत एक सिलाई मशीन की पेशकश की गई थी। इस मूल उपकरण के साथ उन्होंने घर से अपना व्यवसाय शुरू किया और कुछ ही समय में उन्हें काम मिलना शुरू हो गया। उन्होंने अतिरिक्त समय (overtime) काम किया, नियमित रूप से समय सीमा के अंदर काम पूरा किया और जल्द ही वे पहले से अन्य स्थापित दरियों के लिए एक बेहतर प्रतियोगी बन गए। खुशीद कहते हैं, "अब मुझे काम मांगने के लिए इन लोगों का इंतजार करने की ज़रूरत नहीं है, मेरे पास इसका बहरपूर इंतजाम है और हर दिन कुछ न कुछ मिलता रहता है।"

"बाबू कर्म में दूसे जीवन में कोई राहत नहीं है," सौहाग्य ने उनके कृषि मजदूरी के समान्ध में बात करने पर बताया। हालांकि, सुजनी बनाने के काम के कारण उनके जीवन में बदलाव आया है। इसके वाली कमाई से उत्साहित होकर उन्होंने अपनी बहू को इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित किया। अब, घर की दोनों महिलाओं ने अपने परिवार को कर्ज के जाल से मुक्त करने की शुरुआत कर दी है।

पिछले 4 वर्षों में कपड़े के आखिरी कर्मनों का उपयोग करते हुए करीब सो महिलाओं ने आजीविका के हिस्से के रूप में 5 लाख से अधिक सुजनी और आसन बनाए हैं। सुजनी का इस्तेमाल सदियों में रजाज के रूप में किया जाता है और गर्मियों में गद्दों के रूप में, और मोटे आसनों का इस्तेमाल बच्चों को स्कूलों में बैठने के लिए किया जाता है।

‘वापसी’ हाट

‘वापसी’ पहल का एक महत्वपूर्ण परिणाम है, हाट - एक स्थानीय बाजार। गूँज ने कई गाँवों में इन अस्थायी बाजार घरों को बनाने के लिए काम किया ताकि लोग अपने पास जो कुछ भी हो या जो उत्पादन हो उसे स्थानीय स्तर पर खरीद और बेच सकें। हाटों में नाई, मोची, मिठाई की दुकानों आदि को भी एक अच्छा व्यवसाय मिला है, और अन्य जिन्हें गूँज से किंत्र प्राप्त की, वह भी इन बाजारों में अपने माल को बेचने के लिए एक साथ आने लगे, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ा बढ़ा मिला।

कोविद के दौरान ‘वापसी’ पहल:

छत्तीसगढ़: छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के गोवरसिंह गाँव में, राहत सामग्री पैक करने के लिए बार-बार बोरियाँ खरीदने पड़ रही थी, ऐसे में हमारी टीम ने स्थानीय गाँव समुदाय को राहत सामग्री की सुरक्षित पैकिंग के लिए कपड़े के बैग बनाने के लिए प्रेरित किया। सिर्फ एक महिला के साथ शुरू हुई पहल और आगे बढ़ी जब दो और महिलाएं कपड़े के बैग की सिलाई के काम में
शालमल हो गयी। गाँव में ही आजीविका उत्पन्न करने के प्रयास के अलावा, इस्तेमाल किये गए कपड़े की धैर्यियों ने ग्रामीणों को इसकी उपयोगिता को एक नई निगह से देखने का अवसर दिया।

पश्चिम बंगाल: बड़े कमरे के कोने में बैठे दर्जे अक्सर किसी इलाके के सबसे व्यस्त लोगों में से होते हैं। जब लॉक डाउन की शुरुआत हुई तो कोलकाता के इन दर्जे की कमाई का साधन छूट गया। हालाँकि, मास्क की अद्भुत मांग बढने के बाद, हमारी टीम के सदस्यों के उन्हें मास्क बनाने के लिए प्रेरित करने का फैसला किया और उनके लिए कपड़े की व्यवस्था की गयी। इसी तरह दिल्ली में रेड लाइट एरिया और भारत भर में कई अन्य क्षेत्रों ने मास्क बनाना शुरू कर दिया। बीड, महाराष्ट्र में परिवारों के पलायन के उद्देश्य से गूंज और हमारी सहभागी संस्थाएं सामुदायिक खेती में वहां ग्रामीण समुदाय का सहयोग करते थे।

उत्तर प्रदेश: बुंदेलखंड के लोग लम्बे समय से जल संकट से जूझ रहे हैं। इस लॉकडाउन के दौरान, हमारी टीम उपर के ललितपुर जिले में दैनिक वेतनभोगी कृषि अभियांत्रिकी, हथकरघा बुनकरों और पशुपालकों के साथ काम कर रही हैं, जिनके पास अभी काम नहीं है या जो अपनी उपज बेचने में असक्षम हैं। हमने उन्हें भुगतान के बदले टोकरियों बुनने और हाथ के पंखे बनाने के लिए प्रेरित किया। जल्द ही ग्रामीणों ने बुनाई शुरू कर दी और अब उनके पास पहले से ही हाथ के पंखे और टोकरी तैयार हैं तथा उन्होंने और तैयार करने का वादा किया है। इन्हें गूंज राहत कित्त में शामिल किया जाएगा।

राहत कोविड के दौरान आजीविका का काम

- 110 से अधिक व्यक्तियों को मास्क उत्पादन के माध्यम से आजीविका प्रदान की गयी।
- 490 किलोग्राम से अधिक बीज वितरण किया गया।
- 14,200 से अधिक सब्जियों के पौधे प्रदान किए गए।
- 1,000 से अधिक परिवारों तक पौधे / बीज के माध्यम से पहुंच।

आगे की राह...

वर्तमान में, आपदा के बाद पहले के रूप में गूंज ने 'वापसी' में 4 परिचालन रणनीतियों की रुपरेखा तैयार की है:

1. गाँव समुदायों के बीच आवश्यकता मूल्यांकन अभ्यास में संलग्न रहना।
2. गांव स्तर के प्रचलित और आकांक्षी व्यवसायों का एक खाका पहचानना और बनाना।
3. छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचानना और उनको पोषित करना।
4. व्यवसायिक किट प्रदान करना, या छोटे व्यवसाय स्थापित करना।

एक कदम आगे बढ़ते हुए, ग्राउंड टीम ने प्रत्येक क्षेत्र का क्षमता के अनुसार स्थानीय आजीविका के अवसरों की एक विस्तृत सूची बनाने और उनको पहुंचाने का प्रयास किया। निष्पादन पर ये अवसर न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में मदद करेगे, बल्कि बड़े पैमाने पर शहरों की तरफ से भी आलोचना की जा सकती है।

कार्य क्षेत्र से जानकारी:
राहत कोविड / अम्फान / निसर्ग / असम बाढ़

कोविड के समय में गूंज ने शहरों तथा गांवों में स्थापित अपने बहु-हितों को कार्यान्वयन करते हुए 25 राज्यों में सबसे ज्यादा प्रभावित परिवारों व नस्लियों को राशन और राहत सामग्री स्थापित तथा अनुकूलित तरीके से पहुँचाने के लिए 22 लाख किलोग्राम राशन और राहत सामग्री स्थापित तथा अनुकूलित तरीके से पहुँचाए। वर्तमान में चल रहे कोविड राहत प्रयासों के कारण, गूंज की स्थानीय टीमें तत्काल राहत प्रदान करने के लिए जमीनी स्तर पर कार्य कर रही है और दो राज्यों में की तरह अनुकूलित पुनर्वसूल की योजना भी तैयार की गई है। अम्फान तूफान ने बंगाल तथा उड़ीसा को प्रभावित किया है, निसर्ग तूफान ने महाराष्ट्र को तथा बाढ़ ने असम को प्रभावित किया है। ये अवसरों के आधार पर कार्य कर रहे हैं और दो राज्यों में की तरह अनुकूलित पुनर्वसूल की योजना भी तैयार की गई है।

प्रभावित लोगों तक पहुँची तत्काल राहत सहायता
• 22 लाख किलोग्राम राशन तथा अन्य आवश्यक सामग्री, राशन किट 1,49,000 से अधिक परिवारों तक पहुँचाई गयी।
• 1,53,000 से अधिक तैयार भोजन लोगों तक पहुँचाया गया।

स्थानीय सामुदायिक रसोइयों को सहयोग
• 26 सामुदायिक रसोइयों के माध्यम से 1,86,000 से अधिक भोजन तैयार किया गया।
स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल

• 3,90,000 फेस मास्क तथा 1,48,000 से अधिक कपड़े से बने सेनेटरी पैड (माय पैड) तैयार किए गए।

NJPC प्रमुखताएँ

कुल 49 NJPC सत्र आयोजित किये गए, जिसमें कुल 1500 से अधिक महिलाओं की सहभागिता रही।

कुल डिगिटल फॉर वर्क (DFW) की संख्या

• 1,000 से अधिक मातिविधिया कराई गयी।
• 500 से अधिक सहजी बागान लगाए गए।
• जल संसाधनों का कुल क्षेत्रफल जिसे साफ़/मरम्मत/बनाया गया।
  1,12,000 sq m से अधिक तालाब क्षेत्र।
  29,000 sq m से अधिक रुके हुए पानी को खोलना।
  25,000 sq m से अधिक नहर।

अभावों को भरने के प्रयास तथा नेटवर्क की पहुँच को बढ़ाना

• 25 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशों में 360 से अधिक सहभागी संस्थाओं के साथ कार्यों की शुरुआत।
• उद्योग जगत, संगठनों, तथा व्यक्तियों के साथ व्यापक स्तर पर काम।

राहत किट के लिए किसानों से सीधे तौर पर 1,20,000 किलो से अधिक फल और सब्जियां खरीदी गयी।

किट के माध्यम से 2,25,000 अन्य सामानों को जोड़ा गया।

राज्य तथा केंद्रशासित प्रदेश जहां हम वर्तमान में कार्यरत हैं।

आंध्रप्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, वेस्ट बंगाल।

अब, आवश्यकता केवल भोजन की नहीं है...
लाखों लोग अपने जीवन को फिर से स्थापित कर रहे हैं, सामान्य स्थिति में लॉटने की कोशिश कर रहे हैं।

उन्हें बुनियादी सामग्री की आवश्यकता है, कपड़े, बर्तन, स्वच्छता उत्पादों, जूते, फर्नीचर, किटाबें, स्टेशनरी, पद्धे या टाइल्स के प्रकार की वस्तुए... कुछ भी और सब कुछ मायने रखता है। गूँज द्वारा जो कुछ भी हमारे पास है या अभी जो कुछ प्राप्त हो रहा उसे आगे भेजा जा रहा है, लेकिन जरूरत ज्यादा बढ़ी है।

जयदर्शी और चीज़ों के लिए खरीदने के लिए पहुंचने का है न सिर्फ खाद्यान्न पर।

- थोक रूप में सामग्री सहयोग- [https://bit.ly/2yR000h](https://bit.ly/2yR000h)
- राशि सहयोग के लिए- [goonj.org/donate](goonj.org/donate)
- यदि आप गूँज के लिए फण्ड रेजिंग कैपेन शुरू करना चाहते हैं तो कृपया हमें [jibin@goonj.org](jibin@goonj.org) पर बांटो।

वेबिनार और चीज़ों:

2. कोविद का भारतीय संदर्भ में प्रदर्शन और हम क्या भूमिका निभाएँगे- [https://bit.ly/36ZbBY4](https://bit.ly/36ZbBY4)

पिछली रिपोर्टें

- 18 मई - गरमापूणज जीवन सबका अधिकार।
- 25 मई - जमीनी स्तर पर 8 प्रयोग।
- 1 जून - COVID महामारी के दौरान अम्फान चक्रवात का सामना।
- 8 जून - दान नहीं, सम्मान के साथ अग्रसर।


गूँज कार्यालय में नए दिशानिर्देशों के अनुसार पहले की ही भांति पुरानी/नई सामग्रियों को स्वीकार किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए- [www.goonj.org](www.goonj.org) पर देखें।

•